अमर उजाला

Date:07.08.2025

25 लाख रुपये की परियोजना स्वीकृत

थर्मोग्राफिक फॉस्फोर के विकास कार्य से ही मिलती है पहचान : सैनी

संवाद न्यूज एजेंसी

जींद। सीआरएसयू की भौतिकी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. निशा देऊपा को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार की एएनआरएफ योजना के तहत ऑप्टिकल सेंसिंग अनुप्रयोगों के लिए नवाचारी थर्मोग्राफिक फॉस्फोर का विकास विषय पर 25 लाख रुपये की परियोजना स्वीकृत हुई है। यह परियोजना उन्नत तापमान संवेदी सामग्री के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

इस परियोजना में जूनियर रिसर्च फेलो (जेआरएफ) के रूप में कार्यरत शोधार्थी निधि ने अपने शोध कार्य पर आधारित एक शोध पत्र जर्नल ऑफ आणविक संरचना में प्रकाशित करवाया है। जिसका प्रभाव कारक उल्लेखनीय है।

इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामपाल सैनी ने शोधार्थी निधि व उनकी मार्गदर्शिका डॉ. निशा देऊपा एवं भौतिक विभाग के अध्यक्ष प्रो. आनंद मलिक को बधाई दी।

उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि न केवल विश्वविद्यालय बल्कि पूरे राज्य के लिए गर्व का विषय है। प्रो. सैनी ने कहा कि शोधकार्य से ही विश्वविद्यालयों को वास्तविक पहचान मिलती है।

ऐसे शोध कार्यों को बढ़ावा देने के लिए हम शोधार्थियों को हर संभव सुविधाएं देने का काम करेंगे।

शोधार्थी को परियोजना की राशि की स्वीकृति देते कुलपति। स्रोत : सीआरएसयू

दैनिक भास्कर
ई-पेपर

Date:07.08.2025

शोध से ही मिलती है विश्वविद्यालयों को वास्तविक पहचान: कुलपति

जींद| सीआरएसयू के भौतिकी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. निशा देऊपा को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की एएनआरएफ योजना के तहत 25 लाख रुपए की परियोजना स्वीकृत हुई है। यह परियोजना \'ऑप्टिकल सेंसिंग अनुप्रयोगों के लिए नवाचारी थर्मोग्राफिक फॉस्फर का विकास\' विषय पर आधारित है। इसे उन्नत तापमान संवेदी सामग्री के विकास की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है। इस परियोजना में जूनियर रिसर्च फेलो के रूप में कार्यरत शोधार्थी निधि ने अपने शोध कार्य पर आधारित एक शोधपत्र 'जर्नल ऑफ मॉलिक्यूलर स्ट्रक्चर' में प्रकाशित कराया है। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामपाल सैनी ने शोधार्थी निधि, उनकी मार्गदर्शिका डॉ. निशा देऊपा और भौतिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. आनंद मलिक को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह सफलता विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है। शोध कार्य से ही विश्वविद्यालयों को असली पहचान मिलती है।